चौलुक्य राजवंश पर आचार्य हेमचन्द्र का ऐतिहासिक प्रभाव का विश्लेषण

डॉ० हरेन्द्र कुमार,
विभाग–इतिहास
ए.बी. यादव कॉलेज,बोधगया,
बिहार (इंडिया) 824231

सारांश :– कालिकाल सर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्र सूरि इसकाल के अनुपम जैनाचार्य तो थें ही सिद्धराज जयसिंह के सर्वाधिक प्रकाशमान रत्न थे एक जैनाचार्य होकर उन्होनें तत्कालीन शासन व्यवस्था को आमूल चूल प्रभावित किया था वे सिद्धराज के श्रद्धेय होने के साथ–साथ कुमारपाल के गुरू थे हेमचन्द्र आचार्य में बहुमुखी प्रतिभा आचार्य थे डॉ० के० एम० जावेडी ने उन्हें प्रचण्ड व्यक्तित्व का आचार्य कहा है गुजरात के हेमचन्द्र का प्रचण्ड व्यक्तित्व के सस्पर्श से अनुप्राणित दिखता है। हमेचन्द्र का व्यक्तित्व जैन धर्म के इतिहास में महान हैं। हेमचन्द्र बारवीं शताब्दी में चौलुक्य राजा कुमार पाल के गुरू थे। हेमचन्द्र ने जैन धर्म के उत्कर्ष के लिए महान आचार्य का काम किया। जैन मंदिरों का निर्माण में जयसिंह का महत्वपूर्ण भूमिका है। महावीर का एक चैत्य भी जयसिंह सिद्धराज ने बनवाया जयसिंह स्वंय भी महान विद्वान थे। आचार्य हेमचन्द्र ने आख्यान का उपसंहार करते हुए धर्म का मूल सारतत्व धर्मों से सेवन से उस पुरूष को कभी न कभी शुद्ध धर्म की प्राप्ति हो जाती है। आचार्य हेमचन्द्र का प्रभाव चौलुक्य राजवंश अनोखें रूप में पड़ा।

प्रस्तावना :–

आचार्य हेमचन्द्र का नाम भारतीय चिन्तन साहित्य और साधना के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण है। आचार्य हेमचन्द्र और जैन समाज के साथ कुमार पाल ने सौराष्ट्र की यात्रा आरम्भ की दार्शनिक कटाकटी के युग में इस प्रकार की समता और उदारता तथा एकता के लिए प्रायोजन समन्वय–दृष्टि को कायम रखना हिंसा के पुजारियों का ही कार्य था। आचार्य हेमचन्द्र का वास्तविक मूल्य उनकी विविधता और सर्वदेशी में है। प्राकृत भाषा जो हमारे देश की समस्त भाषाओं की जननी है। उसका विपुल भंडार एक मात्र गुजरात की सम्पति है। जयसिंह के दरबार में धर्म प्रचार के रूप में हेमचन्द्र की सफलता विषयक चाहे जितने मत हो इतना निश्चित है कि उनके धार्मिक उत्साह और प्रभावशाली वक्तृत्व ने ही उत्तराधिकारी चालुक्य राजा कुमार पाल के जैन धर्मम्बलम्बी बनाया था। कुमार पाल सहमत हो गया और जैन धर्मानुसार अतीतनाथ स्वामी का बहुत प्रव्यापि से उसने पूजन–आर्यन किया। तभी उसने यह भी ब्रत लिया कि यदि वह अजितनाथ की कृपा से अपने दुश्मन पर विजय पा गया तो वही आदितनाथ मेरा ईश्वर मेरी माता मेरा गुरू और मेरा पिता होगा। अजितनाथ के मंदिर में जाकर उसने पूजा–अर्चना की एवं जैन धर्म के नियमों का पालन

करने लगा। जैन धर्म की अहिंसा प्रधान प्रकृति के कारण गुजरात और आस–पास के प्रदेश की सामाजिक राजकीय और भौगोलिक सब प्रकार की परिस्थिति विशेष रूप से अनुकूल हो गई।

विश्लेषणात्मक अध्ययन – आचार्य हेमचन्द्र और जैन समाज के साथ कुमारपाल ने सौराष्ट्र की यात्रा आरम्भ की। गुजरात के हिन्दू राजाओं के समय वहाँ श्वेताम्बर जैन भी अपनी मूर्तियाँ खुले स्थानों में प्रदर्शित नहीं कर सकते थे। कुमारपाल ही वह पहला राजा था जिसने उन्हें ऐसा अधिकार प्रदान किया। वह जैन धर्म का व्यापक प्रचार–प्रसार चाहता था। इसलिए उन्होनें रथ यात्रा महोत्सव मनाना शुरू किया था। जैन धर्म की दीक्षा पाने और कुमार विहार के बाद कुमारपाल प्रतिवर्ष और आश्विन शुक्लपक्ष के अन्तिम सप्ताह में अष्टाहीनता महोत्सव का आयोजन बड़ी धूम–धाम से करता था। कुमारपाल जयसिंह राज के समान अपने दरबार में विद्वानों की सभा में उपस्थित रहता था। धार्मिक एवं दार्शनिक विषयों पर विचार विमर्श करता था। 100 शिष्य परिवार से आचार्य हेमचन्द्र घेरे रहते थे। जो ग्रन्थ गुरू लिखते थे। ग्रन्थों की प्रतिलिपि उनके शिष्यगण कर लिया करते थे। अत्यंत प्राचीन गुफाओं पता जूनागढ़ के पास चलता है। जैन धर्म का चौलुक्य राजा भीमदेव प्रथम समय में विशेष प्रसार हुआ राजा भीम देव का पुत्र कर्णदेव था। जिसका प्रधानमंत्री मुजाल नामक जैन धर्माम्बलम्बी था। महर्षि हमेचन्द्राचार्य के काल में जैन धर्म की स्थिति अत्यधिक सुदृढ़ ही नहीं हुए अपितु कुछ समय के लिए यह राजधर्म भी बन गया। इसके अतिरिक्त अनेक जैन ग्रन्थकारों ने अपनी अर्ध ऐतिहासिक रचनाओं में चौलुक्य राजाओं की वंशावली का उल्लेख किया है। इसलिए चौलुक्य राजवंश पर आचार्य हेमचन्द्र का ऐतिहासिक प्रभाव रहा है।

निष्कर्ष :–

चौलुक्य राजवंश पर आचार्य हेमचन्द्र का प्रभार इस प्रकार था कि ईसा की बारहवीं शताब्दी के चालुक्य राजा कुमार पाल और धर्म गुरू आचार्य हेमचन्द्र के व्यक्तित्व और कृतित्व पर दृष्टि टिक जाती है। आचार्य हेमचन्द्र और राजा कुमार पाल की सम्मिलित प्रयत्न का सुखद परिणाम था तत्कालीन गुजरात में उस पर्यावरण का निर्माण संभव हो सका था। आचार्य हेमचन्द्र के राजा कुमारपाल के गुरू बनने से पूर्व गुजरात के नरेशों ने यद्यपि जैन धर्म की दीक्षा नहीं ली थी फिर भी इसके प्रति उदार दृष्टि रखते थे। आचार्य हेमचन्द्र के विशाल व्यक्तित्व का प्रभा था कि कुमारपाल को जैन धर्म की दीक्षा देने के लिए मानसिक तौर बाध्य कर दिया दीक्षित होने के बाद तो कुमार पाल ने तत्कालीन समाज में एक क्रांति ही ला दी। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि चालुक्य राज वंश में हेमचन्द्र का ऐतिहासिक प्रभाव था।

संदर्भ सूची –

(1) कुमारपाल प्रतिबोध, सोम प्रभाचार्य पृ० 22

(2) वहीं पृ० – 36

(3) आचार्य हेमचन्द्र डा० वि० भा० मुसलगांवकर पृ० 26

(4) जैन दर्शन डा० महेन्द्र कुमार जैन न्यायाचार्य पृ०–20–21

(5) महामात्व वस्तुपाल का विद्वतमण्डल और संस्कृत साहित्य में उनकी देन डा० भोगीलाल जैन सठडेसारा पृ० 163

(6) हेमचन्द्र चार्य जीवन चरित्र डा० जी० बूलनर (अनुपात कस्तूरभल्ल बंदिया) पृ० 7

(7) कुमारपाल प्रबोध (कुमारपाल चरित संग्रह) सम्पादिक जिन

(8) कुमारपाल चालुक्य डा० सत्यप्रकाश पृ० 153

(9) चालुक्य कुमार पाल लम्मीशंकर व्यास पृ० 204

(10) जैन धर्म का प्रसार डा० के रिषभ चन्द्र पृ० 15

(11) भारतीय इतिहास एक दृष्टि डॉ० ज्योति प्रसाद जैन पृ० 202

(12) गुजरात का जैन धर्म जिन विजय मुनि पृ० 35

(13) भारतीय इतिहास, एक दृष्टि डॉ० ज्योति प्रसाद जैन पृ० 199–200

(14) वही पृ० 7

(15) सोमप्रभाचार्य कुमारपाल प्रतिबोध।